तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

– **नागार्जुन**

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि के अनुसार 'वनों और बागों' में किसका विस्तार है ?
2. तन, मन और वन में परिवर्तन किसके प्रभाव से दिखाई दे रहा है ?
3. कन्हैया के मुकुट की शोभा क्यो बढ़ गई है ?
4. कवि ने हिमालय की झीलों में किसको तैरते हुए देखा है ?
5. कवि ने बादलों को कहाँ घिरते देखा है ?
6. कौन अपनी अलख नाभि से उठने वाले परिमल के पीछे-पीछे दौड़ता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. वसन्त ऋतु के आगमन पर प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन होते हैं ?
2. यमुना तट पर किसकी छटा बिखरी हुई है ?
3. कवि के अनुसार 'घनेरी घटाएँ' क्या कर रही हैं ?
4. 'निशाकाल से चिर अभिशापित' किसे कहा गया है ?
5. कवि ने भीषण जाड़ों में किसे 'गरज-गरज कर भिड़ते देखा है' ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. पद्माकर ने वर्षा ऋतु में प्रकृति का चित्रण किस तरह किया है ? वर्णन कीजिए।
2. कवि के अनुसार वसंत का प्रभाव कहाँ-कहाँ दिखलाई दे रहा है ?
3. नागार्जुन ने 'कवि कल्पित' संदर्भ किसे माना है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. नागार्जुन के अनुसार वसंत ऋतु के उषाकाल का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
   (अ) ''कौन बताए वह छायामय ..... गरज गरज भिड़ते देखा है।''
   (ब) ''औरे भाँति कुंजन ..... औरे बन ह्वै गए।''

ध्यान दीजिए -

अतिशयोक्ति अलंकार -

पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार ।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥

प्रताप के घोड़े का अति तीव्र गति से दौड़ना लोक सीमा का उल्लंघन करता है, अत: यहाँ अतिश्योक्ति अलंकार है।

अतिशयोक्ति अलंकार - जहाँ लोक सीमा का अतिक्रमरण करके किसी वस्तु या विषय का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

योग्यता विस्तार

1. ऋतुओं पर आधारित कविताओं का संग्रह कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में आप अपने विद्यालय/घर अथवा किसी सार्वजनिक स्थल पर एक-एक पौधा लगाकर वर्षभर उसकी देख-रेख करिए।
3. 'वर्षा ऋतु' शीर्षक पर एक निबंध लिखिए।

शब्दार्थ

कूलन = किनारे। **केलि** = क्रीडा। **कुंजन** = बगीचे। **कलित** = शोभित। **कलीन** = कलियों में। **किलकंत** = किलकारी। **पौन** = हवा। **पातन** = पत्तों। **पिक** = कोकिल। **दुनी** = दुनिया। **दीप** = द्वीप। **दीपत** = शोभा, प्रकाश। **दिगंत** = दिशाएँ। **वीथिन** = गलियों। **नवेलिन** = युवतियों। **भीरे** = भीड़। **बौरन** = आम्र मौर। **छ्वै** = छवि। **छवै** = छा गए। **विहग** = पक्षी। **चंचला** = बिजली। **चलाकैं** = चमकाकर। **त्रिविधि समीरे** = शीतल, मंद, सुगंध तीन प्रकार की हवा। **घनेरी** = घनी। **छिति** = पृथ्वी। **छान**= छाजन। **मृगमद** = कस्तूरी। **गौन** = गमन (जाना)। **छाकी** = छकना। **जुन्हाई** = चाँदनी।

अमल = निर्मल। **धवन** = श्वेत। **गिरि** = पर्वत। **तुहिन** = ओस। **तुंग** = ऊँचे। **सलिल** = जल। **तिकत** = तीखे। **बालारुण** = सुबह का सूर्य। **विरहित** = वियोग की पीड़ा। **शैवालों** = काई। **अलख नाभि** = अदृश्य नाभि। **उन्मादक** = नशीले। **परिमल** = पराग। सुगंध। **धावित** = दौड़कर। **अलका** = कुबेर की राजधानी का नाम। **व्योम** = **प्रवाही** - आकाश में बहने वाले। **दुर्गम** = जहाँ जाना कठिन हो।

शौर्य और देश प्रेम

कवि परिचय – राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई. में प्रयाग के निहालपुर मोहल्ले में हुआ था। बचपन में ही काव्य में रुचि के कारण पन्द्रह वर्ष की आयु में इनकी प्रथम काव्य रचना प्रकाश में आई। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निर्वाह करते हुए आपको कई बार जेल यात्राएँ भी करनी पड़ी। साहित्य, परिवार और राजनीतिक जीवन की त्रिधारा से गुजरते हुए अप्रैल सन् 1948 ई. में अल्पायु में ही आपका देहावसान हो गया।

सुभद्राकुमारी चौहान मूलत: वीर रस की कवयित्री थीं। इनकी कविताओं में पारिवारिक और राष्ट्रीय जीवन के सरोकारों का सफल चित्रांकन हुआ है। सुभद्राजी की कविताएँ – 'मुकुल' और 'त्रिधारा' में संकलित हैं। कविताओं के अतिरिक्त आपने कहानियाँ और निबंध भी लिखे हैं। 'बिखरेमोती' और 'उन्मादिनी' आपकी कहानियों का संकलन हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में समसामयिक देश–प्रेम, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप पड़ी है। उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं को तत्कालीन राजनीतिक सन्दर्भों से जोड़कर नव–जागरण का शंखनाद किया है। देश में नव चेतना, त्याग, बलिदान का अलख जगाने में आपके काव्य की महती भूमिका रही है। आप अपनी सहज, सरल और सामान्य बोलचाल की स्वाभाविक भाषा में जटिल से जटिल भावों को बड़ी सादगी से व्यक्त करती हैं। इन कविताओं में वीर एवं वात्सल्य रस प्रधान है। गीत और लोकगीतों की गायन शैली में अपने भावों को स्वर देने में आप सिद्ध हैं। अलंकार और प्रतीकों के मोह से मुक्त अनुभूतियों का सहज प्रकाशन ही आपकी काव्यगत विशेषता है। आपकी गद्य रचनाएँ छायावादी प्रवृत्ति की निर्मल झाँकी हैं जहाँ छायावाद का वही स्वप्नलोक, वही आदर्शवाद, वही उदात्तभाव आधारभूत रूप में विद्यमान हैं।

जन–जन में देश प्रेम और स्वाभिमान की भावना जगाने वाले कवियों में आपका स्थान प्रमुख है ।

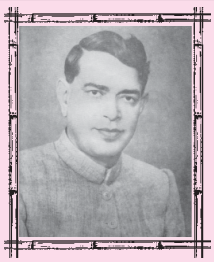

कवि परिचय – रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में सन् 1908 ई. में हुआ। हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, बँगला का भी आपको अच्छा ज्ञान था। दिनकर जी ने विभिन्न शासकीय पदों पर बड़ी योग्यता के साथ कार्य किया। द्वितीय महायुद्ध के दिनों में आपने राजकीय युद्ध प्रचार विभाग में काम करते हुए राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया। आपको सन् 1950 में मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1972 में आपकी 'उर्वशी' रचना के लिए ज्ञान पीठ पुरस्कार मिला। 24 अप्रैल 1974 में साहित्य सेवा करते हुए राष्ट्र के इस दिनकर का अवसान हो गया।

'छायावाद के ठीक पीठ पर आए' दिनकर ने अपनी प्रवाहमयी ओजस्विनी कविता से नए युग की शुरुआत की। दिनकर सामाजिक चेतना के चारण हैं। आपकी प्रारंभिक काव्य कृतियाँ– 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी' और 'नीलकुसुम' हैं। इन मुक्तक काव्य संग्रहों के अतिरिक्त 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' प्रबंध रचनाएँ हैं। 'मिट्टी की ओर' 'अर्धनारीश्वर' और संस्कृति के चार अध्याय 'आपकी गद्य कृतियाँ हैं।'

दिनकर जी प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रान्ति के कवि हैं। अतीत के सुनहरे गीत लिखकर इन्होंने वर्तमान को प्रेरणा दी है। उनमें प्राचीन गौरव के प्रति अगाध प्रेम और वर्तमान के प्रति असंतोष है। भारत का मग्न–अतीत–गौरव दिनकर को सदैव कसकता रहा जिसकी वेदना रचनाओं में व्यक्त हुई है। शोषण के विरुद्ध क्रान्ति का आह्वान भी उनकी कविता में प्रमुख स्वर बना है। आपकी रचना में स्वाभाविक रूप से उपमा, रूपक, विरोधाभास, दृष्टान्त, सन्देह आदि अलंकार आ गए हैं। आपकी रचनाओं में मानवीकरण और ध्वन्यार्थ व्यंजना सशक्त और प्रभावी है। छन्द विधान भावानुकूल हैं। दिनकर प्रगतिवादी रचनाकार हैं। वह एक ऐसी सामाजिक चेतना का परिणाम हैं, जो मूलत: भारतीय है और राष्ट्रीय भावना से परिचालित है। दिनकर ओज के प्रखर गायक और राष्ट्रीयता के शिखर रचनाकार हैं।

केन्द्रीय भाव

देश प्रेम में आत्म विस्तार का भाव निहित है। जिस भाव के अन्तर्गत व्यक्ति परिवार और समाज की परिधि से भी आगे अपने देश के प्रति अपना लगाव अनुभव करने लगता है, उस भाव को देश प्रेम के अंतर्गत परिगणित किया जाता है। देश प्रेम में देश की रक्षा और देश के विकास को महत्व दिए जाने के साथ देश के प्रति पूज्य भाव का संचार भी सन्निहित होता है। जब तक व्यक्ति देश को अपना आराध्य नहीं बनाता, तब तक देश के प्रति समर्पण का भाव भी उसमें जाग्रत नहीं होता।

देश के जन जीवन और देश की सांस्कृतिक चेतना के स्वरूप से अभिभूत होते हुए इनके विकास की आधार भूमि भी देश प्रेम में सन्निहित रहती है। काव्य के अंतर्गत राष्ट्रीय भावना को देश प्रेम के साथ में ही अनुभव किया जाता है।

राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है। राष्ट्र गौरव का बखान और उसकी रक्षा का प्रबल भाव जिस कविता में व्यक्त होता है, उस वीर भाव को शौर्य के अन्तर्गत गिना जाता है। शौर्य का भाव आत्म गौरव से परिपूर्ण होता है। हिन्दी कविता के सुदीर्घ इतिहास में इस भाव की प्रतिष्ठा प्रायः सभी युगों में होती रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक किसी न किसी रूप में शौर्य और देशप्रेम का भाव जाग्रत रहा है।

आधुनिक युग में सुभद्राकुमारी चौहान और रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों ने देश प्रेम से संबंधित कविताओं की रचना की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छेड़े गए आंदोलन में सुभद्राकुमारी चौहान सक्रिय रूप से सम्मिलित थीं, इसलिए उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्र के मुक्ति यज्ञ में समिधा बनने के लिए तत्पर सेनानियों के उद्‌बोधन में अनेक गीतों की रचना की है। प्रस्तुत गीत में उन्होंने राष्ट्रवीरों के परिश्रम को वासन्ती भावनाओं से जोड़ दिया है। वसन्त जो जीवन के उल्लास का प्रतीक है। युद्ध के उत्साह में भी वीरों के मन में ऐसी ही प्रसन्नता जगानी चाहिए। वसन्त का प्रकृति विधान और वसन्त की मनोदशा को कवयित्री ने युद्ध के प्रसंग से जोड़ दिया है। वे इस गीत से भारत के गौरवमय प्रतिरोधी पक्ष को भी प्रस्तुत करती हैं। उन्हें कुरुक्षेत्र, हल्दीघाटी और भूषण याद आते हैं। ये सभी शौर्य के पहचान चिह्न हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी कवि हैं। उनकी कविता में जागरण का संदेश है। वे हिन्दी काव्य साहित्य में अपने ओजस्वी स्वर के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं। प्रस्तुत कविता में आत्म गौरव का विस्तार किया गया है। कवि अपने उद्‌बोधन में कहते हैं कि वैराग्य और योग से बढ़कर है-कर्म का पुरुषार्थ। इस पुरुषार्थ को जगाने के लिए जरूरी है कि अन्याय के समक्ष न झुको; अपनी आन को मत त्यागो। स्मरण रखिए कि विपत्तियाँ ही व्यक्ति को संघर्षशील बनाती हैं। विनय भाव भी वीरता की छाया में सुशोभित होता है। जीवन तो गतिशीलता का ही नाम है। कवि ने स्पष्ट किया है कि स्वतंत्रता का भाव वीरता और आत्म गौरव से ही सुरक्षित रखा जाता है। कविता में ओज गुण का सर्वत्र समाहार है। तत्सम् शब्दों के विधान में कवि ने एक नया जोश भर दिया है।

वीरों का कैसा हो वसंत ?

वीरों का कैसा हो वंसत ?
आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू,नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधू-वसुधा, पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर-देश में, किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
हैं रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि-अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

गलबाँहें हों या हो कृपाण,
चल-चितवन हो, या धुनष-बाण
हो रस-विलास, या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

कह दे अतीत! अब मौन त्याग,
लंके! तुझमें क्यों लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

हल्दीघाटी के शिलाखंड,
ऐ दुर्ग! सिंह-गढ़ के प्रचंड,
राणा-ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं,
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बँधी, स्वच्छन्द नहीं,
फिर हमें बतावे कौन ? हंत!
वीरों का कैसा हो वसंत ?

- सुभद्राकुमारी चौहन

(मुकुल काव्य संग्रह से)

उद्‌बोधन

वैराग्य छोड़कर बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी की सदृश जिओ रे!

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर-का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

जब कभी अहं पर नियति चोट देती है,
कुछ चीज अहं से बड़ी जन्म लेती है,
नर पर जब भी भीषण विपत्ति आती है,
वह उसे और दुर्घर्ष बना जाती है।
चोटें खाकर बिफरो, कुछ अधिक तनो रे!
धधको, स्फुलिंग में बढ़ अंगार बनो रे!

स्वर में पावक यदि नहीं; वृथा वन्दन है।
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रन्दन है;
सिर पर जिसके असिंघात रक्त-चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं!
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं!

जीवन गति है, वह नित अरुद्ध चलता है,
पहला प्रमाण पावक का, वह जलता है।
सिखला निरोध-निर्ज्वलन धर्म छलता है,
जीवन तरंग-गर्जन है, चंचलता है।
धधको अभंग, पाल-विपल अरुण जलो रे!
धरा रोके यदि राह, विरुद्ध चलो रे!

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सभी दिशाएँ क्या पूछ रही हैं ?
2. किसके अंग-अंग पुलकित हो रहे हैं ?
3. वसंत के आने पर कौन तान भरने लगता है ?
4. कवि चट्टानों की छाती से क्या निकालने के लिए कह रहा है ?
5. कवि के अनुसार मनुष्य का भीतरी गुण क्या है ?
6. भ्रामरी किसका अभिनन्दन करती है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. 'ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग-जाग' से कवि का क्या आशय है ?
2. सिंहगढ़ का दुर्ग एवं हल्दी घाटी में किसकी याद छिपी है ?
3. विजयी के सदृश बनने के लिए कवि क्या-क्या करने को कह रहा है ?
4. स्वाधीन जगत में कौन जीवित रह सकता है ?
5. जीवन की परिभाषा क्या है ? कवि के विचारों को लिखिए ।
6. कवि ने वीरता के कौन से दो लक्षण बताएँ हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. कवयित्री वीरों के लिए किस तरह वसंत का आयोजन करना चाहती हैं?
2. वसंत उत्सव के लिए प्रेरक पंक्तियों का उल्लेख कीजिए।
3. कवि के अनुसार जब अहं पर चोट पड़ती है तब उसकी प्रतिक्रिया क्या होती है ?
4. स्वतंत्रता प्रेमी जाति के गुणों का वर्णन कीजिए ।
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   (अ) गलबाँहे हो या हो कृपाण ..... कैसा हो वसंत।
   (ब) स्वर में पावक ..... मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

ध्यान दीजिए -

रौद्र रस - **''श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे।**
सब शोक अपना भूलकर, करतल-युगल मलने लगे,
संसार देखे अब हमारे, शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा, वे हो गए उठकर खड़े ॥''

उपर्युक्त उदाहरण में अर्जुन की क्रोधपूर्ण अवस्था का वर्णन है। पंक्तियों में रौद्र रस के निम्नलिखित अंग

स्थायी भाव – क्रोध
आश्रय – अर्जुन
आलंबन – शत्रु
अनुभाव – क्रोधपूर्ण घोषणा, शरीर काँपना
संचारीभाव – आवेग, चपलता, श्रम, उग्रता।

सहृदय के हृदय में स्थित क्रोध नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वहाँ **रौद्र रस** की निष्पत्ति होती है।

इसे भी जानिए -

''हे सारथे ! हैं द्रोण क्या, देवेन्द्र भी आकर अड़े,
है खेल क्षत्रिय बालकों का व्यूह-भेदन कर लड़े।
मैं सत्य कहता हूँ सखे ! सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।''

इस उदाहरण में अभिमन्यु की वीरता का चित्रण किया गया है, जिसमें रस के विभिन्न अंग निम्नानुसार दृष्टव्य हैं –

स्थायी भाव – उत्साह
आश्रय – अभिमन्यु
आलंबन – द्रोणाचार्य आदि
अनुभाव – अभिमन्यु के वचन
संचारीभाव – रोमांच, उत्सुकता, उग्रता।

सहृदय के हृदय में स्थित उत्साह नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वह **वीर रस** का रूप ग्रहण कर लेता है।

प्रश्न 1. संकलित कविता में से 'वीर रस' की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए वीर रस को परिभाषित कीजिए।
2. रौद्र रस को समझाते हुए वीर एवं रौद्र रस में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

यह भी समझिए -

अन्योक्ति अलंकार –

''माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि ।
फूले - फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बारि ॥''

इस उदाहरण में माली (काल का प्रतीक) फूलों को (वृद्धों का) निर्धारित समय पर तोड़ लेता है। जो आज कली (किशोरावस्था) के रूप में हैं उन्हें भी माली रूपी काल किसी दिन तोड़ लेगा।

अन्योक्ति अलंकार – जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ किसी बात को सीधे या प्रत्यक्ष न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कहते हैं वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

प्रश्न – अन्योक्ति अलंकार का अन्य उदाहरण लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. सुभद्राकुमारी चौहान एवं दिनकर जी की कविताओं में से जो कविताएँ आपको प्रभावित करती हों, उनकी एक हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए ।
2. देशप्रेम से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ कंठस्थ कीजिए एवं किसी राष्ट्रीय पर्व पर विद्यालय के कार्यक्रमों में सुनाइए।
3. 'आप देश के लिए क्या कर सकते हैं?' विषय पर अपने साथियों के साथ परिचर्चा कीजिए।
4. स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्रों को एकत्रित कर एक एलबम तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

उदधि = समुद्र। **दिक्** = दिशाएँ। **कृपाण** = तलवार। **चंद** = चंद्रवरदाई। **प्राची** = पूर्व। **अनंग** = कामदेव। **ज्वलंत** = प्रकाशमान, जलता हुआ। **हंत** = मृत्यु, हनन

पीयूष = अमृत। **अनय** = अनीति। **अशनिघात** = वज्रघात। **स्फुलिंग** = ज्योति–कण। **अरुद्ध** = निरंतर। **तुंग** = ऊँचा। **सोम** = एक प्राचीन भारतीय लता जिसका सेवन मादक पदार्थ के रूप में किया जाता था। **व्योम** = आकाश। **दुर्धर्ष** = कठिन। **भ्रामरी** = दुर्गा। काली।

सामाजिक समरसता

कवि परिचय – कबीर का जन्म बनारस में संवत् 1455 ई. में माना जाता है। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने इन्हें बनारस के लहरतारा तालाब के किनारे पाया था। इनकी ममता की छाँव में ही कबीर का पालन-पोषण हुआ। कबीर प्रसिद्ध संत रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। कबीर की पत्नी का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल था। कबीर सत्संग और पर्यटन प्रिय थे, इसलिए वे अनुभव समृद्ध भी थे, कबीर की जीवनी से संबंधित इन तथ्यों पर विद्वानों के मतभेद हो सकते हैं, किंतु कबीर के काव्य में उल्लिखित कुछ संकेतों से इनकी आंशिक प्रमाणिकता पुष्ट होती है। कबीर के व्यक्तित्व-निर्माण में उनकी जीवनगत परिस्थितियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। कबीर की मृत्यु संवत् 1575 में मगहर नामक स्थान पर मानी जाती है।

कबीर भक्तिकालीन निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि माने जाते हैं। उनकी प्रामाणिक कृति 'बीजक' है। इसमें साखी, सबद और रमैणी छंदाधारित तीन भाग हैं, कबीर को समाज सुधारक के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनकी कविता में समाज की चिन्ता का स्वर प्रमुख है। समाज में व्याप्त वैषम्य, अंधविश्वास और उसकी प्रवृत्तियों पर उन्होंने व्यंग्य का प्रहार किया है। वे ईश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञान को साधन मानते हैं। वे योग-साधना के गूढ़ रहस्यों को भी अपनी कविता में प्रस्तुत करते हैं। वे निराकार ईश्वर को पाने के लिए ज्ञान-मार्ग, इंद्रिय-नियमन तथा योग साधना को महत्वपूर्ण मानते हैं। प्रेम की उदात्त अनुभूति भी उनके काव्य में प्राप्त होती है। नाम महिमा, गुरु का महत्व, सदाचार आदि विषयों पर केन्द्रित रचनाएँ कबीर के काव्य को संत काव्य की व्यापक पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं। कबीर के काव्य में यद्यपि अभिव्यक्ति की सहजता है, किंतु उनका काव्य साहित्यिक सौंदर्य से भी अनुप्राणित है। उनकी भाषा को खिचड़ी भाषा कहा गया है। अपने देशाटन के कारण वे जगह-जगह की बोली वाणी से परिचित होते रहे और वहाँ के शब्द भी ग्रहण करते रहे, इसलिए उनकी भाषा में अनेक बोलियों के शब्द आ गए हैं। उनके प्रतीक, रूपक तथा अन्योक्तियाँ काव्य-साहित्य की धरोहर हैं।

रामनरेश त्रिपाठी

कवि परिचय – रामनेरश त्रिपाठी का जन्म जौनपुर (उ.प्र.) के कोइरीपुर नामक गाँव में सन् 1889 ई. में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा जौनपुर में ही हुई। मात्र बाईस वर्ष की आयु में इन्होंने काव्य रचना के क्षेत्र में पदार्पण किया। सन् 1962 ई. में त्रिपाठी जी का देहावसान हो गया।

रामनरेश त्रिपाठी स्वच्छन्दतावादी भावधारा के प्रतिष्ठित कवि हैं। हिन्दी कविता में स्वच्छन्दतावाद (रोमांटिसिज्म) के जन्मदाता श्रीधर पाठक की काव्य पंरपरा को इन्होंने आगे बढ़ाया है। देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की अनुभूति इनकी रचनाओं के मुख्य विषय हैं। प्रकृति चित्रण में कवि को अद्‌भुत सफलता मिली है। त्रिपाठी जी की चार काव्य कृतियाँ उल्लेखनीय हैं 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी', और स्वप्न। 'वीरबाला', 'लक्ष्मी' और 'वीरांगना' इनके उपन्यास तथा 'सुभद्रा', 'जयन्त' और 'प्रेमलोक' नाट्य कृतियाँ हैं।

रामनरेश त्रिपाठी प्रकृति के सफल चितेरे हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में प्रकृति का चित्रण व्यापक, विशद् और स्वतंत्र रुप से किया है। सहज मनोरम प्रकृति चित्रों में छायावादी झलक स्पष्ट दिखाई देती है। छायावादी शैली का मानवीकरण और रूमानियत कवि की रचनाओं में यत्र-तत्र विद्यमान है। श्री त्रिपाठी की काव्य भाषा सहज, शुद्ध और खड़ी बोली है। कविता में व्याकरणिकं नियमों का विशेष पालन किया गया है। उन्होंने कहीं-कहीं लोक प्रचलित उर्दू छन्दों एवं शब्दों का प्रयोग किया है।

द्विवेदी युग और छायावाद के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में रामनरेश त्रिपाठी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। छायावादी भाषा-शैली का स्रोत उनकी काव्य कृतियों में देखा जा सकता है। इन्हीं रचनाओं से हिन्दी काव्यधारा मुड़कर छायावाद के रूप में विकसित और गतिशील होती है।

केन्द्रीय भाव

सामाजिक जीवन के अन्तर्विरोधों को समाप्त करने का लक्ष्य ही सामाजिक समरसता का आधार है। समाज एक संपूर्ण इकाई है। जिसमें मनुष्य की शक्तियों के विकास की सभी संभावनाएँ निहित हैं। व्यक्ति की शक्तियाँ जीवन की विभिन्न दिशाओं को उद्घाटित करने वाली भले हों किन्तु समष्टि के साथ वह अपनी संवेदना में एक हृदय बनकर स्पंदित हो, पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सहानुभूति ही सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्त है।

काव्य में इस तरह की संवेदना का विकास कविता के सामाजिक सत्य को प्रकट करता है। कविता की इसी भाव भूमि की चर्चा करते हुए प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे लोकमंगल की भूमि कहा है। लोकमंगल के अन्तर्गत संपूर्ण समाज के कल्याण का भाव सन्निहित है। हिंदी कविता में यह भाव सदैव से पल्लवित पुष्पित होता रहा है।

मध्यकाल में कबीरदास के माध्यम से सामाजिक समरसता का स्वर मुखरित हुआ था। वे सामाजिक समरसता का आधार व्यक्ति के आचरण में खोजते हैं। अच्छे आचरण वाला व्यक्ति ही सामाजिक समरसता का आधार बन सकता है और अच्छे आचरण के निर्माण हेतु जिन मानवीय गुणों की आवश्यकता है उनकी चर्चा कबीर की प्रस्तुत साखियों में है। संतोषवृत्ति करुणा का विस्तार एवं सभी आत्माओं में परमात्मा के निवास का अनुभव ही सामाजिक समरसता के मूल्यों को सुरक्षित रखने वाले गुण हैं। कबीर की मान्यता थी कि जिनका कर्म ऊँचा होता है वही बड़ा कहा जा सकता है, जाति से कोई व्यक्ति ऊँचा-नीचा नहीं होता है। वस्तुतः गुण ग्राहक समाज ही उदात्त समाज बनाता है।

रामनरेश त्रिपाठी, द्विवेदी युगीन कवि हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य एक कर्तव्यनिष्ठ प्राणी है, किन्तु कभी-कभी वह कर्तव्य विमुख कार्य भी करने लगता है और जीवन के उदात्त उद्देश्यों से विचलित हो जाता है। इस तरह के कार्यों से वह समाज की कोई भलाई नहीं कर पाता है। अपने समाज और अपनी मातृभूमि के प्रति भी मनुष्य में कर्तव्य भावना होना चाहिए, तभी उसकी जीवन यात्रा सार्थक है। कवि की लोक कल्याण की भावना सामाजिक समरसता को उच्च धरातल प्रदान करती है। सरल-सुबोध भाषा में कवि ने अमूल्य जीवन संदेश को प्रसारित किया है।

कबीर की साखियाँ

साई इतना दीजिए, जामैं कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥1॥

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मरी चाम की स्वांस से, लौह भसम ह्वे जाय ॥2॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥3॥

जाति हमारी आतमा, प्रान हमारा नाम।
अलख हमारा इष्ट है, गगन हमारा ग्राम ॥4॥

कामी क्रोधी लालची, इन पै भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ शूरमाँ, जाति वरण कुल खोय ॥5॥

ऊँचै कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरै भर्‌या, साधू निंद्या सोइ ॥6॥

तरवर तास बिलंबिए, बारह मास फलंत।
सीतल छाया गहर फल, पंखी केलि करंत ॥7॥

जब गुण कूँ गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुण कौं गाहक नहीं, कौड़ी बदलै जाइ ॥8॥

सरपहि दूध पिलाइये , दूधैं विष ह्वै जाइ।
ऐसा कोई नां मिलै, सौं सरपैं विष खाइ ॥9॥

करता केरे बहुत गुणं, आगुणं कोई नांहि।
जे दिल खोजौं आपणौं, तौ सब औंगुण मुझ मांहि ॥10॥

- कबीर

जीवन संदेश

जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म-निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवनभर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है ॥

रवि जग में शोभा सरसाता सोम सुधा बरसाता ।
सब हैं जगे कर्म में कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता ।
है उद्देश्य नितान्त तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अन्त कर्ममय तन का ॥

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य रहित है जग में तुमने कभी विचारा ?
बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए तुमने निज जीवन में ?

वह सनेह की मूर्ति दयामयी माता-तुल्य महीं है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है ?
हाथ पकड़कर प्रथम जिन्होंने चलना तुम्हें सिखाया ।
भाषा सिखा हृदय का अद्‌भुत रूप स्वरूप दिखाया ॥

जिनकी कठिन कमाई का फल खाकर बड़े हुए हो।
दीर्घ देह के बाधाओं में निर्भय खड़े हुए हो।
जिनके पैदा किए, बुने वस्त्रों से देह ढके हो।
आतप-वर्षा-शीत-काल में पीड़ित हो न सके हो॥

क्या उनका उपकार-भार तुम पर लवलेश नहीं है।
उनके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है।
सतत् ज्वलित दुख-दावानल में जग के दारुण रन में।
छोड़ उन्हें कायर बनकर तुम भाग बसे निर्जन में॥

यही लोक-कल्याण-कामना यही लोक-सेवा है।
यही अमर करने वाले यश-सुरतरु का मेवा है ।
जाओ पुत्र ! जगत् में जाओ, व्यर्थ न समय गँवाओं।
सदा लोक-कल्याण-निरत हो जीवन सफल बनाओ॥

जनता के विश्वास कर्म मन ध्यान श्रवण भाषण में।
वास करो, आदर्श बनो, विजयी हो जीवन-रण में।
अति अशांत दुखपूर्ण विशृंखल क्रांति-उपासक जग में।
रखना अपनी आत्म-शक्ति पर दृढ़ निश्चय प्रतिपग में॥

जग की विषम आँधियों के झोंके सम्मुख हो सहना।
स्थिर उद्देश्य-समान और विश्वास-सदृश दृढ़ रहना ।
जाग्रत नित रहना उदारता-तुल्य असीम हृदय में ।
अन्धकार में शांत चन्द्र-सा, ध्रुव-सा निश्चल भय में ॥

जगन्नियंता की इच्छा से यह संसार बना है ।
उसकी ही क्रीड़ा का रूपक यह समस्त रचना है ।
है यह कर्म-भूमि जीवों की यहाँ कर्मच्युत होना ।
धोखे में पड़ना अलभ्य अवसर से है कर धोना ॥
पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला पोसा ।
किए हुए है वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा ।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा ।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा ॥

- रामनरेश त्रिपाठी
('पथिक' से)

अभ्यास

बोध प्रश्न-

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लोहा किसकी स्वाँस से भस्म हो जाता है ?
2. भक्ति किस प्रकार के प्राणियों से नहीं हो सकती ?
3. गुण लाख रुपयों में कब बिकता है ?
4. संसार में विद्यमान सचर-अचर प्राणी क्या कर रहे हैं ?
5. दयामयी माता के तुल्य किसे माना गया है ?
6. जीवन को सफल बनाने के लिए कवि क्या निर्देश देते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कबीर ईश्वर से क्या माँगते हैं ?
2. कवि के अनुसार किस प्रकार के वृक्ष के नीचे विश्राम करना चाहिए ?
3. साधु से किस प्रकार के प्रश्न नहीं करना चाहिए ?
4. 'लोक कल्याण कामना' से कवि का क्या आशय है ?
5. कवि जग की विषम आँधियों के सम्मुख किस-किस प्रकार के स्वभाव की अपेक्षा कर रहा है?
6. कर्मच्युत होने से क्या परिणाम होगा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. दुर्बल को सताने का क्या दुष्परिणाम होता है ?
2. अवगुण का निवास कहाँ है ?
3. किन विशेषताओं को खोकर भक्ति की जा सकती है?
4. मनुष्य किन-किन शक्तियों से सम्पन्न है, संसार में जीने का उसका उद्देश्य लिखिए ?
5. जीवन संदेश कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
6. संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा स्थल है, ऐसा कवि ने क्यों कहा है ?

काव्य सौन्दर्य

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(क) ऊँचै कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरै भरया, साधूं निंद्या सोइ ॥

(ख) जब गुण कूं गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुन कौं गाहक नहीं, तब कोड़ी बदलै जाइ॥

(ग) तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य-रहित है जग में तुमने कभी विचारा ?
बुरा न मानों, एक बार सोचो तुम अपने मन में ।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए तुमने निज जीवन में ?

ध्यान दीजिए -

करुण रस – **''सब बंधुन को सोच तजि, तजि गुरुकुल को नेह ।**
हा सुशील सुत ! किमि कियो अनत लोक में गेह ॥''

पुत्र की मृत्यु पर पिता के विलाप का करुण चित्र प्रस्तुत किया गया है। हे पुत्र! तुमने अपने सब बंधुओं की चिंता और गुरुकुल का स्नेह छोड़कर, इस लोक को त्याग कर परलोक में अपना घर क्यों बना लिया ?

उपर्युक्त उदाहरण में

स्थायी भाव	–	शोक
आश्रय	–	पिता
आलंबन	–	पुत्र
अनुभाव	–	पिता के उद्‌गार
संचारीभाव	–	दीनता, मोह, विषाद

करुण रस – सहृदय के हृदय में स्थित शोक नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ संयोग हो जाता है तब वहाँ करुण रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न –: करुण रस को उदाहरण सहित समझाइए ।

इस भी जानिए -

गीतिका – ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ = 14+12=26 मात्राएँ

''साधु भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।
। ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ
सभ्यता की सीढ़ियों पर, सूरमा चढ़ने लगे॥
ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ
वेद मंत्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे।
ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ
वंचकों की छातियों में, शूल से गढ़ने लगे॥''

गीतिका छंद – यह एक मात्रिक सम छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 व 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में लघु, गुरु होता है।

प्रश्न – गीतिका छंद को अन्य उदाहरण सहित समझाइए ।

और भी समझिए -

हरिगीतिका छंद – ।। । ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ = 16+12=28 मात्राएँ

वह सनेह की मूर्ति दयामयि, माता तुल्य महीं है।

।।ऽ ।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।। ऽ।।ऽ ऽ
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा, क्या कुछ शेष नहीं है ॥
ऽ। ।।। ।। ।।। ।ऽऽ ।।ऽ।ऽ । ऽऽ
हाथ पकड़ कर प्रथम जिन्होंने, चलना तुम्हें सिखाया।
ऽऽ । ऽ ।।। ऽ ऽ।। ऽ। ।ऽ। ।ऽऽ
भाषा सिखा हृदय का अद्भुत, रूप स्वरूप दिखाया ॥

हरिगीतिका - यह सम मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16-12 की यति के साथ 28 मात्राएँ होती है।

प्रश्न 1. हरिगीतिका छंद के लक्षण देते हुए एक अन्य उदाहरण लिखिए ।

योग्यता विस्तार

1. 'राष्ट्रीय सेवा योजना' अथवा 'एन.सी.सी' के शिविर में किए गए कार्यों पर केन्द्रित एक आलेख तैयार करिए तथा सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
2. लोक सेवा के लिए समर्पित महापुरुषों की जीवनियों का संग्रह करिए।
3. सामाजिक समरसता पर केन्द्रित सूक्तियों की लेख-पट्टियाँ तैयार करिए और कक्षा में लगाइए।

शब्दार्थ

साई = स्वामी, प्रभु। **जामें** = जिसमें। **कुटुम** = कुटुम्ब। **जाकी** = जिसकी। **हाय** = पीड़ा भरी सांस। **भसम** = भस्म, राख। **तरवार** = तलवार। **अलख** = ईश्वर, आराध्य। **सोवन** = स्वर्ण, सोना। **सुरै** = सुरा, शराब। **निंद्या** = निंदा। **गहर** = पर्याप्त। **पंखी** = पक्षी। **केलि** = क्रीडा, आनंद। **सरपें** = सर्प का। **केरे** = के। **औंगुण** = अवगुण, दोष। **करता** = कर्ता, भगवान। **आपणौं** = अपना।

कर्म=निरत - काम, धंधे में लगे हुए। **वसुधा** = पृथ्वी। **स्वकर्म** = निजी कर्म या अपना कर्म। **अमित** = अत्यधिक। **आतप** = गर्मी। **दावानल** = जंगल की आग। **सुरतरु** = कल्पवृक्ष। **लवलेश** = थोड़ा। **सतत** = लगातार। **विषम** = विपरीत। **कर्मच्युत** = कार्य से हटना। **जगन्नियंता** = ईश्वर। **उऋण** = ऋण मुक्त।

कल्याण की राह

कवि परिचय – हिन्दी में हालावाद के प्रवर्तक कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन का जन्म 17 नवम्बर सन् 1907 को इलाहाबाद में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा, प्रयाग और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई है। आप अनेक वर्षो तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक रहे हैं। कुछ वर्षों तक विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया है। बच्चन जी की प्रथम रचना 'एकांत संगीत' सन् 1934 में प्रकाशित हुई। आपको सर्वाधिक ख्याति तथा लोकप्रियता 'मधुशाला' के प्रकाशन से प्राप्त हुई।

आपने मध्यवर्ग के विक्षुब्ध वेदनाग्रस्त मन को वाणी का वरदान दिया है जिससे मध्यवर्ग और कविता के बीच दूरियाँ समाप्त हुई हैं। समाज की अभावग्रस्त व्यथा, परिवेश का खोखलापन, नियति और व्यवस्था के सम्मुख आम आदमी की बेबसी आपके काव्य के विषय हैं। दृढ़ आत्म-विश्वास, संघर्षशील जीवन और पुनर्निमाण की प्रेरणा बच्चन के काव्य का प्रमुख स्वर है। यह स्वर प्रेम, मस्ती और दीवानगी का है।

बच्चन जी की भाषा सीधी सादी और जीवंत है। भाषा सर्वग्राह्य गेय शैली में संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से पाठकों से सीधा संवाद करती है। सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य गरिमा प्रदान करने का श्रेय बच्चन को जाता है। आपने अपने काव्य-पाठ से कवि सम्मेलन की परम्परा को सुदृढ़ किया और जनप्रिय बनाया है।

छायावादोत्तर युग के स्वच्छन्दतावादी कवियों में आपका स्थान महत्वपूर्ण है। आपकी प्रमुख रचनाएँ – 'तेरा हार', 'खैयाम की मधुशाला', 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'आकुल अंतर', 'विकल विश्व', 'सतरंगिनी', 'हलाहल', 'मिलन यामिनी', 'प्रणय पत्रिका' आदि हैं। आत्मकथा लेखन भी आपने किया है। 'क्या भूलूँ क्या याद करुँ' और 'नीड़ का निर्माण फिर' आपकी प्रसिद्ध आत्मकथा हैं।

कवि परिचय – आधुनिक हिन्दी कविता के प्रयोगवादी कवि नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले में सन् 1922 ई. में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा माधव कॉलेज, उज्जैन एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। आपके व्यक्तित्व में बैष्णव संस्कारों की छाप पड़ी दिखाई देती है। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में आप सक्रिय रहे। आपने आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में भी कार्य किया है। आपने ट्रेडयूनियन के लिए एक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन कार्य किया।

नरेश मेहता नई कविता के कवि हैं। नई कविता में इनकी पहचान 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन पर बनी। आप न तो अपने समय की किसी विचारधारा के कट्टर अनुयायी रहे और न ही किसी फैशन से सम्बद्ध। आपकी कविता तात्विक दृष्टि से आधुनिक है; पर आधुनिकतावादी नहीं। आपकी कविता का उत्स मानवीय प्रेम, करुणा और आनंद है। उसमें कहीं आक्रोश का स्वर नहीं है। वे अपनी कविता में विषयवस्तु का चयन और आकलन अपने मन्तव्य से करते हैं। आपने मिथकीय प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग सर्वथा नई दृष्टि से जीवन मूल्यों को चित्रित करने के लिए किया है।

नरेश मेहता मूलत: कवि और उपन्यासकार हैं। आपकी काव्य कृतियाँ – 'बन पाखी सुनो', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत उत्सव', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान' तथा 'शबरी' हैं। आपके उपन्यास 'यह पथ बंधु था' 'धूमकेतु: एक श्रुति', 'नदी यशस्वी है', 'दो एकान्त' और 'डूबते मस्तूल' हैं।

मेहता जी अपने समय के सरल किंतु गंभीर विचारक हैं। आपमें एक अलग नयापन है जो समकालीन अन्य कवियों से आपको बिल्कुल ही अलग करता है।

केन्द्रीय-भाव

व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए व्यक्ति-आचरण को आधार माना जा सकता है। व्यक्ति-आचरण सामजिक मर्यादाओं की सुरक्षा भी करता है और बदलती युग-प्रवृत्तियों के अनुरूप नई सामाजिक मान्यताओं की प्रतिष्ठा करने में भी अपना सहयोग करता है। व्यक्ति के क्रिया-कलाप उसकी चिंतन प्रणाली और उसकी सांस्कृतिक चेतना ही समाज के मूल्यों को निर्धारित करने वाली बनती है। जिस समाज में उच्च मूल्यबोधी जीवन प्रणाली को स्थापित करने वाले व्यक्ति होते हैं, वह समाज ही उदात्त बनता है। व्यक्ति जब ऐसे समाज की संरचना में संलग्न होता है तथा अपने जीवन को इस तरह के ध्येय के निमित समर्पित करता है, तब वह कल्याण के मार्ग को ही प्रशस्त करने वाला होता है।

जीवन का लक्ष्य मात्र व्यक्ति की मुक्ति नहीं बल्कि समूह की मुक्ति से ही जुड़कर - कल्याणमय हो उठता है। हिन्दी साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में यह पक्ष सदैव केन्द्रीय बोध की तरह प्रतिष्ठित रहा है। काव्य शास्त्रीय सिद्धान्तों में भी कहा गया है कि काव्य का एक उद्देश्य अकल्याणकारी शक्तियों का विनाश भी है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक काव्य का यह लक्ष्य किसी न किसी रूप में प्रकट होता रहा है।

आधुनिक काल के छायावाद तथा छायावाद के उपरांत की कविता में कल्याण का यह भाव कहीं प्रबोधन के रूप में, कहीं कथावस्तु की रचना में तथा कहीं चरित्रों की संरचना में प्राप्त हो जाता है।

हरिवंशराय बच्चन छायावाद के उपरांत के प्रमुख गीतकार हैं। उन्होंने प्रस्तुत गीत में उद्‌बोधन के माध्यम से जीवन के इस लक्ष्य की ओर संकेत किया है। जीवन का कल्याणमय पथ सतत् सत्कर्म निष्ठा से ही प्राप्त किया जा सकता है। कवि ने स्पष्ट किया है कि जीवन का मर्म समझने के लिए उन व्यक्तित्वों को अपने भीतर उतारना पड़ता है, जिन्होंने इस मार्ग पर अपना संपूर्ण समर्पित कर दिया है। अपने कर्म पर दृढ़ विश्वास रखने वाला व्यक्ति ही पथ की विपदाओं को पार करने में समर्थ होता है।

जीवन की इस राह में स्वप्नों का भी उतना ही महत्व है, जितना सत्य का है। व्यक्ति स्वप्नों के माध्यम से ही जीवन के नए क्षितिजों से जुड़ता है किंतु स्वप्न तभी साकार होते हैं जब उनके साथ कर्म का सत्य जुड़ जाता है। केवल सपने देखते रहने वाले जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं। जीवन की समग्रता स्वप्न और कर्म के तालमेल में ही है।

कविता में जीवन के वैविध्य के अनेक प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं। इन्हें प्रस्तुत करने में कवि ने अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है। भाषा प्रवाहमय है।

दूसरी कविता नरेश मेहता द्वारा रचित है। इस कविता में निरंतर कर्मशील बने रहने की ओर संकेत है। सदैव चलते रहो। जीवन में यदि क्रियाशीलता रहती है तो सृजन की नई संभावनाएँ बनती हैं। यह सृजन समाज को उच्च से उच्चतर स्तर प्रदान करता रहता है। सूर्य को प्रतीक मान कर कवि ने कहा है कि अपनी सृजन यात्रा के माध्यम से ही सूरज अंधकार को दूर करता है; धरती को प्रकाश और ऋतुओं को नया शृंगार प्रदान करता है। जो कर्मनिष्ठ होते हैं वे समृद्धि को प्राप्त करते हैं। नदियाँ गतिशील हैं, इसलिए जल का चक्र निर्मित है। गतिहीनता ही मृत्यु है। मानव की संपूर्ण विकास यात्रा उसकी गतिशील कर्मचेतना का ही परिणाम है। जो गतिशील रहेगा वही जीवन का सर्वोत्तम प्राप्त कर पाएगा।

संपूर्ण कविता गतिशील पदावली से समन्वित है। नए और उदात्त बिम्बों की प्रस्तुति से यह कविता जीवन में प्रकाश जागृत करती है।

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(1)

पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इनकी कहानी,
हाल इनका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,

अनगिनत राही गए इस
राह से , उनका पता क्या,

पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,

यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(2)

यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,

तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,

सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना

हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है।
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।

पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(3)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, वन सुन्दर मिलेंगे।

किस जगह यात्रा खतम हो
जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे,
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(4)

कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपनी उमर, अपने समय में
और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में
किंतु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(5)

स्वप्न आता स्वर्ग का; दृग
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को,
ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरती,
एक दुनिया डूब जाती,

आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।

पूर्व चलने के, बटोही
बाट की पहचान कर ले।

– हरिवंशराय बच्चन
(सतरंगिणी से)

चरैवेति-जन गरबा

चलते चलो, चलते चलो
सूरज के संग-संग चलते चलो, चलते चलो !!

तम के जो बन्दी थे
सूरज ने मुक्त किये
किरनों से गगन पोंछ
धरती को रंग दिये,

सूरज को विजय मिली, ऋतुओं की रात हुई
कह दो इन तारों से चन्दा के संग-संग चलते चलो !!

रत्नमयी वसुधा पर
चलने को चरण दिये
बैठी उस क्षितिज पार
लक्ष्मी, शृंगार किये

आज तुम्हें मुक्ति मिली, कौन तुम्हें दास कहे
स्वामी तुम ऋतुओं के, संवत् के संग-संग चलते चलो !!

नदियों ने चलकर ही
सागर का रूप लिया
मेघों ने चलकर ही
धरती को गर्भ दिया

रुकने का मरण नाम, पीछे सब प्रस्तर है
आगे है देवयान, युग के ही संग-संग चलते चलो !!

मानव जिस ओर गया
नगर बसे, तीर्थ बने
तुमसे है कौन बड़ा
गगन सिंधु मित्र बने

भूमा का भोगो सुख, नदियों का सोम पियो
त्यागो सब जीर्ण बसन, नूतन के संग-संग चलते चलो !!

– नरेश मेहता

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. चलने के पूर्व वटोही को क्या करना चाहिए ?
2. कवि के अनुसार व्यक्ति को किस रास्ते पर चलना चाहिए ?
3. प्रत्येक सफल राहगीर क्या लेकर आगे बढ़ा है ?
4. नरेश मेहता अपनी कविता में किसके साथ चलने की बात कह रहे हैं ?
5. नदियाँ आगे चलकर किस रूप में परिवर्तित हो जाती हैं?
6. कवि ने रुकने को किसका प्रतीक माना है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि स्वप्न पर मुग्ध न होने की राय क्यों देता है ?
2. कवि ने जीवन पथ में क्या-क्या अनिश्चित माना है ?
3. कवि के अनुसार जीवन पथ के यात्री को पथ की पहचान क्यों आवश्यक है ?
4. कवि के अनुसार क्षितिज के उस पार कौन बैठा है और क्यों ?
5. मानव जिस ओर गया, उधर क्या-क्या हुआ ?
6. 'चरैवेति' कविता में कवि ने लोगों को क्या-क्या सलाह दी है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि चलने के पूर्व बटोही को किन-किन बातों के लिए आगाह कर रहा है ?
2. स्वप्न और यथार्थ में संतुलन किस तरह आवश्यक है ? स्पष्ट करें।
3. 'चरैवेति-जन गरबा' कविता का मूल आशय क्या है ?
4. कवि युग के संग-संग चलने की सीख क्यों दे रहा है ?
5. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   (क) 'रास्ते का एक काँटा ..... सीख का अनुमान करलें।'

   (ख) रुकने का मरण नाम ..... संग-संग चलते चलो!!

यह भी समझिए

वक्रोक्ति अलंकार - **''मैं सुकुमारि नाथ वन जोगु ।**
तुमहिं उचित तप, मोकहूँ भोगू॥''

यहाँ रामचन्द्र जी के प्रति सीताजी का सामान्य कथन है कि ''मैं सुकुमारी हूँ और आप वन के योग्य हैं।'' आपको वन जाना चाहिए तथा मुझे घर रहना चाहिए। पर यह सामान्य उक्ति न होकर विशिष्ट या विचित्र उक्ति है। वस्तुत: सीता के कथन से अन्य भाव ध्वनित होता है। अर्थात् सीता इसके विपरीत स्वयं भी वन जाना चाहती हैं। अत:

वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ कथित का ध्वनि द्वारा दूसरा अर्थ ग्रहण किया जाए वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

(वक्र+उक्ति=टेढ़ा मेढ़ा कथन या उक्ति की विचित्रता ही वक्रोक्ति का अर्थ है।)

प्रश्न - वक्रोक्ति अलंकार की परिभाषा किसी अन्य उदाहरण सहित समझाइए -

योग्यता विस्तार

1. नरेश मेहता की अन्य दो कविताएँ खोजकर पढ़िए जिसमें जीवन की सीख दी गई हो।
2. शिक्षक की सहायता से जीवन-दर्शन से सम्बन्धित दस कविताओं का एक संकलन कर हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।
3. संत कवियों ने व्यक्ति को कल्याण की राह दिखलाई है। अन्य संत कवियों के पदों को खोजकर लिखिए
4. आप विकलांग व्यक्तियों की मदद किस प्रकार करते हैं, कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ

बटोही = राहगीर, पथिक। **बाट** = रास्ता। **सरित** = नदी। **गिरि** = पर्वत, पहाड़। **गह्वर**= गुफा। **वन** = जंगल। **सुमन**=पुष्प, फूल। **शर** = बाण। **जग**=संसार। **पंथ**=रास्ता। **दृग**=आँख। **दीप्ति**=आभा। **पग**=पैर। **उन्मुक्त** = बन्धन रहित। **अनोखी** = विचित्र। विलक्षण।

तम=अंधकार। **गगन**=आकाश। **वसुधा** = पृथ्वी। **सागर** = समुद्र। **मेघ** = बादल। **मरण** = मृत्यु। **भूमा** = पृथ्वी। **जीर्ण** = पुराना। **नूतन**=नया।

जीवन-दर्शन

कवि परिचय – छायावादी कवियों की वृहत् चतुष्टयी में विदुषी कवयित्री महादेवी वर्मा का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में फर्रुखाबाद (उत्तरप्रदेश) में एक सुसम्पन्न परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही महादेवी वर्मा ने राष्ट्रीय जागरण की कविताएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था; जिसमें व्यापक मानवीय संवेदना की झलक मिलती है। आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य एवं बाद में उपकुलपति भी रहीं। कुछ वर्षों तक आपने उत्तरप्रदेश 'विधान परिषद्' की मनोनीत सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

प्राचीन भारतीय साहित्य, दर्शन तथा सन्तयुग के रहस्यवाद के प्रभाव के फलस्वरूप आपकी काव्याभिव्यञ्जना शत् प्रतिशत् भारतीय परम्परा की अनुगामनी रही। वेदना की एकान्त साधिका होने के कारण आपकी रचनाओं में वेदना का मधुर-रस समरसता का आधार बनकर प्रकट होता है।

महादेवी वर्मा मूलत: कवयित्री हैं, किन्तु आपने उत्कृष्ट गद्य लेखन भी किया है। 'स्मृति की रेखाएँ' और 'अतीत के चलचित्र' उनके संस्मरणात्मक गद्य रचना संग्रह हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ', 'पथ का साथी', 'मेरा परिवार' और 'क्षणदा' आपके निबंध संकलन हैं। प्रमुख काव्य-संग्रह के रूप में 'नीहार', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'यामा' उल्लेखनीय हैं। 'यामा' काव्य कृति पर महादेवी वर्मा को ज्ञानपीठ-पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत सरकार द्वारा आप पद्म-विभूषण की उपाधि से सम्मानित की गईं।

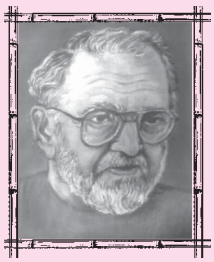

कवि परिचय – हिन्दी साहित्य को आधुनिकता के साँचे में ढालने का प्रमुख श्रेय 'अज्ञेय' को दिया जाता है। उन्होंने कविता, कहानी तथा उपन्यास सभी क्षेत्रों में नवीन शैली का श्रीगणेश किया। आपकी रचनाएँ समसामयिक तथा नई पीढ़ी के लेखकों के लिए मानक-स्वरूप हैं।

आपका जन्म मार्च सन् 1911 ई. में हुआ। आपका पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय था। आपका बचपन लखनऊ, काश्मीर, बिहार तथा मद्रास में बीता। शिक्षा मद्रास तथा लाहौर में हुई। आप सुप्रसिद्ध लेखक, क्रान्तिकारी विचारक, श्रेष्ठ सम्पादक तथा विदेशों में भारतीय विषयों के ख्याति प्राप्त अध्यापक भी रहे। साहित्य में भाषा और अभिव्यक्ति के आधार पर आपने नए प्रयोग किए; जिसे प्रयोगवाद का नाम दिया गया। इसी शैली के सात नए कवियों की कविताओं के संकलन आपके द्वारा प्रकाशित किए गए जिन्हें 'तार-सप्तक' के नाम से जाना जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में इन तार-सप्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

अज्ञेय को साहित्य के सर्वोपरि सम्मान 'भारतीय ज्ञानपीठ' तथा 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुए। उत्तरप्रदेश संस्थान का 'भारत-भारती' पुरस्कार आपको मरणोपरान्त प्रदान किया गया। हिन्दी साहित्य में आपकी छवि अद्वितीय लेखक के रूप में विद्यमान है। अज्ञेयजी की मृत्यु 1987 ई. में हुई। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'हरी घास पर क्षण भर', 'बाबरा अहेरी', 'आँगन के पार-द्वार', 'सागर-मुद्रा', 'असाध्य वीणा' आदि।